

## प्रसाद की रचना में नारी चेतना

श्री राम सजीवन भास्कर

असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी

राजकीय महिला महाविद्यालय झांसी (उ.प्र.)

**शोध सार-** जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक थे। हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना उनके ही द्वारा की गई, जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में न केवल माधुर्य की रससिद्ध धारा का प्रवाह हुआ, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयाम के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई। प्रसाद जी आधुनिक हिंदी साहित्य के गौरवपूर्ण व महान लेखक हैं। जिनकी लेखनी से हिंदी साहित्य की सभी विधाएं संचित हुई। उनकी प्रतिभा का निरूपण कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक और आलोचना आदि सभी रूपों में देखा जा सकता है। जिससे हमारे साहित्य की चेतना सबल व संप्राण हो उठी। प्रसाद जी अपनी रचनाओं में जिस प्रकार नारी का सशक्त वर्णन किये हैं। वह तत्कालीन समाज के सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध एक सशक्त आवाज है। प्रसाद की रचनाओं में नारी समाज की रुढ़िवादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध खड़े होकर; अपनी अस्मिता, स्वाभिमान की रक्षा के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती है। प्रसाद के रचनाओं में वर्णित नारियों के विषय में रामचंद्र तिवारी लिखते हैं-

“नारी के व्यक्तित्व में ममता, श्रद्धा, त्याग, शक्ति, शौर्य, छल, घृणा, प्रपंच, ईर्ष्या और विलास के विरोधी धाराओं का; कभी अलग-अलग कभी एक साथ गुम्फन और प्रकृति और मानव का संघर्ष, संयोग का धूप-छांव अंकन, नियत के विधान और मानवीय प्रयत्न दोनों के सहयोग से, मानव के उत्थान-पतन का चित्रण, भौतिक उपादानों को आध्यात्मिक महिमा से मंडित करने की अद्भुत कला, अमूर्त भावनाओं और मनोवृत्तियों को मूर्तिमत्ता प्रदान करने की क्षमता, प्रत्यक्ष और गोचर रूप से परे रहस्यमई, सौंदर्य और सत्य निरूपण के लिए प्रसाद चिर और अमर रहेंगे।”<sup>1</sup>

**कुंजी शब्द -** नारी, अस्मिता, समाज, ममता, छायावाद सामाजिकता, ऐतिहासिक आदि।

स्त्री पुरुष का साथ आदिकाल से चला आ रहा है प्राचीन शास्त्रों में भी स्त्री को प्रेम की अर्धांगिनी माना जाता रहा है। स्त्री और पुरुष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पुरुष के जीवन को सार्थक नारी ही करती है। नारी ने अपनी दया, ममता, वात्सल्यता, करुणा, त्याग, प्रेम, कोमलता एवं मधुरता से पुरुष की कठोरता को कम करके उसके नीरस जीवन में प्रेम व ममता की अजस्र धारा प्रवाहित करने का काम करती रही है।

नारी को हिंदी साहित्य में अनेक रूपों में चित्रित किया गया है, परंतु यदि हम जयशंकर प्रसाद जी की बात करते हैं; तो उनकी रचनाओं में नारी का कई रूपों में वर्णन मिलता है। प्रसाद जी जिस युग के रचनाकार थे। उस युग में नारियों की स्थिति अति दयनीय थी। स्त्रियों को उनके मौलिक अधिकार से भी वंचित रखा जाता था। समाज में उन्हें दोगले दर्जे का स्थान प्राप्त था। उन्हें विभिन्न प्रकार की सामाजिक कुरीतियों जैसे:- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि का सामना करना पड़ता था। जिससे नारियों का जीवन नर्क के समान था। प्रसाद जी अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के महत्व और अस्तित्व की पहचान कराई। प्रसाद की नारी पात्रों की एक अलग पहचान है। उन्होंने ऐसी नारी पात्रों की कल्पना की जो समाज में परिवर्तन लाना चाहती थी तथा नारी के अस्तित्व को

स्थापित करना चाहती थी। प्रसाद की रचनाओं में नारी एक ओर कोमल भावना वाली है; तो वहीं दूसरी ओर अपने आत्म सम्मान के लिए सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोही भावना अपना कर संघर्ष करती हुई भी दिखाई देती है। प्रसाद के नारी पात्रों के संबंध में जयनाथ नलिन कहते हैं:- “प्रसाद जी ने अपने हृदय की समस्त कोमलता, कल्पना की रंगीन भावना की स्निग्धता, कला की सफलता, नारी चरित्र के भव्य निर्माण में प्रयुक्त की है।”

“ एक खास प्रकार के नारी पात्रों के सृष्टि में प्रसाद जी अद्वितीय हैं। जो अपने निश्छल प्रेम, त्याग और बलिदान से पाठकों के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती हैं। आकाशदीप की चंपा, देवव्रत की सुमाता, और पुरस्कार की मधुलिका आदि की अनुपम नारी सृष्टि है। नियति और समाज से एक साथ संघर्षरत नारी का ऐसा चित्रण दुर्लभ है।”<sup>2</sup>

प्रसाद के साहित्य का आधार देखा जाए तो ऐतिहासिक रहा है; परंतु उनके पात्र तत्कालीन समाज की चुनौतियों के अनुकूल हैं। इसीलिए आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कल थे। प्रसाद युग भारतवर्ष का पराधीन युग था। जो स्वतंत्रता के संघर्षों व गांधी के आंदोलन से प्रेरित था। उस समय पुरुषों के लिए ही अपने कर्तव्यों का निर्धारण करना कठिन था। स्त्रियों के लिए तो यह दुगुनी चुनौती थी। इस प्रकार प्रसाद जी आज से एक सदी पहले अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के ऐसे रूप को गढ़ रहे थे। जो आज के समय में भी प्रगतिशील व प्रासंगिक है। प्रसाद के यह नारी पात्र स्वावलंबी और स्वाभिमानी है। ‘गुदड़ी के लाल कहानी की बुढ़िया सबसे यही कहती है। मैं नौकरी करूंगी, कोई मेरी नौकरी लगा दे। इस कहानी में प्रसाद बुढ़िया के माध्यम से उसके स्वाभिमान को उद्धाटित करते हैं। बुढ़िया की बेटी है वह भी कुछ धन कमा लेती थी; परंतु बुढ़िया का विश्वास था कि कन्या का धन खाने से उस जनम में बिल्ली, गिरगिट और न जाने क्या-क्या होना पड़ेगा। बुढ़िया को अपने स्वाभिमान पर पूर्ण विश्वास था। रामनाथ बनिया बुढ़िया को काम पर रख लेता है, और जब एक दिन बुढ़िया को मुर्छा आ जाती है; तब बनिया बुढ़िया को पेंशन देने की बात करता है, तो बुढ़िया का स्वाभिमान जाग जाता वह कहती है ‘ मैं बिना किसी काम किये इसका पैसा कैसे ले सकती हों।’ स्वाभिमानी बुढ़िया की यह वाक्य पाठक के हृदय को झकझोर देता है।

प्रसाद के नारी पात्रों में एक ही वस्तु व व्यक्ति के प्रति, प्यार और घृणा की तीव्र भावना समान रूप से पाई गई है। यह भावना आकाशदीप की चंपा और पुरस्कार की मधुलिका की भावना में देखा जा सकता है। पुरस्कार की मधुलिका अरुण को प्राण दंड मिलने पर बदहवास होकर आ खड़ी होती है, और राजा द्वारा पुरस्कृत किए जाने पर स्वयं के लिए प्राण दंड मांगती है। यह उसके व्यक्तिगत प्रेम व राष्ट्र प्रेम की चरम सीमा ही है। जो उससे कहलवाती है कि-” मुझे भी प्राण दंड मिलो।”<sup>4</sup>

इसी तरह आकाशदीप की नायिका चंपा जो बुद्ध गुप्त से प्यार करने लगती है, लेकिन जैसे ही उसे संदेह होता है कि उसके पिता का कातिल बुद्ध गुप्त ही है। तो चंपा बुद्ध गुप्त से दूरी बना लेती है और

विरक्तों की तरह जीवन व्यतीत करने लगती है। वह बुद्ध गुप्त से कहती है कि- "विश्वास! कदापि नहीं बुद्ध गुप्त! जब मैं अपने हृदय में विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिए दे दिया,, तब मैं कैसे कहूं, मैं तुमसे घृणा करती हूं, फिर भी मैं तुम्हारे लिए मर सकती हूं। अंधेरे हैं जल दस्यु तुम्हें प्यार करती हूं।"- प्रसाद जी की सामाजिक विचारधारा जो उनके उपन्यासों तथा नाटकों में परिलक्षित होती है। वह समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबर, सामाजिक विषमता आदि है। जिसे सामने रखकर उन्होंने अपने नारी पात्रों को महत्व प्रदान किया है।

तितली उपन्यास में प्रसाद जी का नारीवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उपन्यास में मूर्तिमान नारीत्व आदर्श भारतीय पत्नी भाव के दर्शन होते हैं। तितली उपन्यास ग्रामीण जीवन और कृषि को केन्द्र में रखकर लिखी गई एक नारी की कहानी है। तितली की नायिका की छवि एक आदर्श प्रेमिका और एक आदर्श पत्नी की है। तितली जो नायिका है वह प्रसाद की ऐसी नारी पात्र है। जिसमें स्वाभिमान का तीव्र भाव है। उसके पति मधुबन को सजा और उसके पूर्वजों को शेरकोट से बेदखल हो जाने पर तथा बनजरिया पर लगान लग जाने पर, इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी, वह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता है; बल्कि वह खुद मेहनत करके लड़कियों की पाठशाला चलाती है। इसमें प्रसाद जी स्त्रियों की शिक्षा पर बल देते हैं, क्योंकि एक शिक्षित नारी ही नारी समाज को शिक्षित बना सकती है। वह अपने पुत्र को स्वयं पालती है। इस कठिन समय में भी वह अपने ही अवलंब पर स्वाभिमान पूर्वक जीना चाहती है। इस तरह वह अपने अस्तित्व को बचाए रखने में समर्थ होती है।

उपन्यास 'इरावती' की नारी पात्र इरावती जो इस उपन्यास की नायिका है। वह एक अज्ञात कुल शीला बालिका है। जिससे महा दंडनायक पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र प्रेम करता है; परंतु गुरुजनों के विरोध के कारण, वह उसे छोड़कर चला जाता है। तब इरावती महाकाल मंदिर में देवदासी का जीवन व्यतीत करती है। कई बार वह बृहस्पति मित्र की कामुक को दृष्टि का शिकार बनती है, फिर भी वह अपने कष्टों को अपने हृदय में दबा कर रखती है, और चाहती है कि वह किसी के सहानुभूति का पात्र ना बने। अग्निमित्र से कहे इन शब्दों में उसका स्वाभिमान व्यक्त होता है।- "स्त्री के लिए, जब देखा कि स्वावलंबन का उपाय कला के अतिरिक्त दूसरा नहीं, तब उसी का आश्रय लेकर जी रही हूं। मुझे अपने में जीने दो।"-<sup>6</sup>

प्रसाद जी ने नारी के गौरव, मान- मर्यादा के समाज के रूढ़िवादी सोच पर कर प्रहार किया। ध्रुवस्वामीनी नाटक की नायिका 'ध्रुवस्वामीनी' का आत्म गौरव जागृत होता है। वह शक शिविर में जाने के लिए, स्पष्ट इनकार कर देती है, और कहती है:- "यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते तो मुझे बेच भी नहीं सकते।"-<sup>7</sup>

प्रसाद जी के नारी पात्रों में देश और राष्ट्र के लिए असीम सम्मान है। वह अपने को राष्ट्र के लिए समर्पित करने से भी पीछे नहीं हटती हैं। चंद्रगुप्त नाटक में तक्षशिला नरेश अपने पुत्र आम्भीक के प्रभाव में रिश्वत लेकर यवनों को भारत में आक्रमण करने का मार्ग दे देते हैं। इससे क्रुद्ध होकर तक्षशिला नरेश की पुत्री अलका, अपने पिता व भाई से विद्रोह करके; राष्ट्र के लिए जन आंदोलन चलाती है। अलका द्वारा गाया गया जागरण गीत:-

**“हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती। स्वयं प्रभा समज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती। अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सौंच लो।**

**प्रशस्त पुण्य पंथ है, बड़े चलो बड़े चलो।।”-<sup>8</sup>**

चंद्रगुप्त नाटक में प्राय सभी स्त्री पात्रों में देश प्रेम दिखाई देता है। प्रसाद की नायिकाएं कल्याणी, मालविका, कर्नेलिया, सुहासिनी मात्र प्रेमिकाएं ही नहीं बल्कि उनमें आत्मसम्मान और त्याग की ज्योति भी है। प्रसाद जी ने अपने नाटक को ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण के आधार पर रचा है। उनकी स्त्री पात्र ऐतिहासिक और कल्पित दोनों हैं।

वस्तुतः जयशंकर प्रसाद मुख्य रूप से कवि थे। उनका भावक हृदय प्रायः नारी प्रेम और सौंदर्य जैसे सरस एवं मनमोहक विषयों में अधिक रमा। उनके काव्य की मूल चेतना, प्रेम और सौंदर्य है। प्रसाद जी सौंदर्य को एक उदात्त एवं पवित्र भावना मानते हैं। जिसमें वासना का लेस भी ना हो। आंसू में नायिका के पावन तन की शोभा निरूपित करते हुए वे कहते हैं:-

**“चंचला स्नान कर आवे, चंद्रिका पर्व में जैसी।**

**उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी।....”**

आंसू में नारी वासना का प्रतीक नहीं है, बल्कि पुरुष के अंधकारमय जीवन में आलोक की तरह है।

अपने प्रसिद्ध महाकाव्य कामायनी, जिसमें कुल 15 सर्ग हैं। श्रद्धा सर्ग में प्रसाद जी संसार में जो कुछ भी सुंदर है। वह परमात्मा का ही स्वरूप है के आधार पर; श्रद्धा के सौंदर्य का निरूपण बड़े मनोयोग से करते हैं। मनु ने जब श्रद्धा को पहली बार देखा तो, वह एक सुंदर दृश्य के रूप में दिखाई पड़ी। जिसके अंग प्रत्यंग अत्यंत सुंदर थे। वह फूलों से लदी हुई सुकुमार लता जैसी प्रतीत हो रही थी :-

**“और देखा वह सुंदर दृश्य, नयन का इंद्रजाल अभिराम।**

**कुसुम वैभव में लता सामान, चंद्रिका से लिपटा घनश्याम।।”-<sup>10</sup>**

प्रसाद के काव्य में स्थूलता एवं मांसलता का नितांत अभाव है। नारी के बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ उसके आंतरिक सौंदर्य का भी उद्घाटन किया गया है। नारी अपने हृदय में निहित प्रेम, त्याग, दया, ममता, करुणा, क्षमा, माधुर्य आदि गुणों को, और अपने जीवन के स्वर्ण स्वप्न को पुरुषों पर अर्पित कर चुकी है; इसलिए नारी श्रद्धा का पात्र है, जो जीवन में अमृत रसधार की तरह प्रवाहित है:-

**“क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प असु जल से अपने,**

**तुम दान कर चुकी पहले ही, जीवन के सोने से सपने।**

**नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,**

**पीयूष झोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।”-<sup>11</sup>**

**निष्कर्ष** - प्रसाद जी की रचनाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उनकी रचनाओं में जो स्त्री पात्र पाई जाती हैं। वह ऐतिहासिक एवं काल्पनिक दोनों तरह की हैं। प्रसाद की स्त्री पात्र पुरुष की प्रेरक शक्ति होने के साथ-साथ उनमें समाज की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह भी है। उनमें त्याग, बलिदान, दया, ममता, करुणा, क्षमा आदि गुणों के साथ-साथ स्वाभिमान के लिए तथा पितृसत्ता; जो समाज की मानसिकता में हावी है, के विरुद्ध विद्रोह भी है। उनमें साहस और जोश है तो दूसरी ओर गम्भीरता है। जिससे वे अपने देश, समाज एवं परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व का पालन भी करती दिखाई पड़ती हैं। प्रसाद की स्त्री पात्र नेतृत्व स्वीकार कर पूर्ण रूप से राजनीति में सक्रिय भी होवे उदात्त आदर्श स्थापित करने वाली हैं। प्रसाद के नारी पात्रों में ऐसी पात्र भी हैं, जिन्होंने अपने चरित्र को स्मरणीय बना दिया जैसे:- चम्पा, मधुलिका, ध्रुवस्वामीनी, अलका, तितली, देवसेना, इरावती, श्रद्धा आदि। जिन्होंने अपनी शील कर्तव्यपरायणता और त्याग के बल पर समाज को नतमस्तक होने पर मजबूर कर दिया। वे स्वयं पुरुषों पर आश्रित न होकर स्वावलंबी और संघर्षी हैं।

\*\*\*\*\*

संदर्भ:-

- 1- हिंदी गद्य का साहित्य रामचंद्र तिवारी संस्करण 12वां पृष्ठ 733।
- 2- हिंदी साहित्य का इतिहास संपादक डॉ नागेंद्र सह संपादक डॉक्टर हरदयाल संस्करण तिथि पृष्ठ 566।
- 3-प्रतिध्वनि कहानी संग्रह जयशंकर प्रसाद।
- 4-आंधी कहानी संग्रह जयशंकर प्रसाद।
- 5- तितली उपन्यास जयशंकर प्रसाद वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2005।
- 6- इरावती उपन्यास जयशंकर प्रसाद लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद 2015।
- 7- ध्रुवस्वामीनी नाटक जयशंकर प्रसाद।
- 8-चंद्रगुप्त नाटक जयशंकर प्रसाद प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली पृष्ठ 126
- 9- आंसू कविता जयशंकर प्रसाद विकीपीडिया।
- 10- कामायनी जयशंकर प्रसाद सरस्वती प्रेस प्रकाशन इलाहाबाद श्रद्धा सर्ग पृष्ठ 29।
- 11- कामायनी से शंकर प्रसाद सरस्वती प्रेस प्रकाशन इलाहाबाद लज्जासर पृष्ठ 53।